बी. एड. विद्यार्थियों का प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन

तारकेश्वर गुप्ता*

प्रस्तुत अध्ययन विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे सत्र 2012-2013 के बी. एड. विद्यार्थियों के प्रशिक्षण के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति से संबंधित है। अध्ययन हेतु 140 विद्यार्थियों (70 विद्यार्थी विश्वविद्यालय से एवं 70 विद्यार्थी राजकीय महाविद्यालय से) का चयन किया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित छात्राध्यापक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया है। परिणाम में पाया गया कि विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

प्रस्तावना

आज के आधुनिक भूमंडलीय युग (Global Age) में किसी भी राष्ट्र के लिए उसके भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का अत्यंत महत्त्व है। वस्तुतः भौतिक एवं मानवीय संसाधन ही किसी राष्ट्र को अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा होने के लिए सक्षम बनाते हैं। निःसंदेह किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है, तथा मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है। प्रत्येक मनुष्य के अंदर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर नहीं प्राप्त होते हैं तो मानव का विकास अधूरा रह जाता है। विकास के आधुनिक युग में राष्ट्र की बौद्धिक सम्पदा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। निःसंदेह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील, संस्कारित एवं सभ्य बनाना है। यह व्यक्ति तथा समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति एवं तर्क शक्ति, समस्या समाधान एवं बौद्धिकता, प्रतिभा और रुझान, धनात्मक

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (बी.एड. विभाग), हेमवतीनंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खटीमा, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

भावुकता तथा कुशलता, अच्छे मूल्यों तथा रुचियों को विकसित करता है। इसी के द्वारा ही वह मानवीय, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्राणी में परिवर्तित हो जाता है।

मनुष्य प्रतिक्षण एवं प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखता है। इसका समस्त जीवन ही शैक्षिक प्रक्रिया के अधीन है। अत: शिक्षा एक निरंतर तथा गतिशील प्रक्रिया है, इसका संबंध सदा विकसित होने वाले मानव तथा समाज के साथ है। यद्यपि व्यक्ति समाज के विभिन्न उपादानों एवं अभिकरणों से सीखता है तथापि मानव मात्र को शिक्षित करने का दायित्व अध्यापक वर्ग पर ही है। विद्यालय को समाज का लघु रूप कहा जाता है। विद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाला व्यक्ति भी समाज का ही एक अंग है, किंतु वह जन सामान्य से भिन्न इसलिए है कि उसने कुछ विशिष्ट विधियों, कौशलों एवं युक्तियों का ज्ञान अर्जित किया है।

अध्यापन पेशे में आने वाले विद्यार्थी को विशेष प्रशिक्षण लेना पड़ता है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक तैयार करने के लिए हमारे देश में विभिन्न अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम चल रहे हैं, जैसे—चार वर्षीय बी.एड./बी.एस.सी. बी.एड. कार्यक्रम (जो एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में चलाए जा रहे हैं।) परंतु अधिकतर विश्वविद्यालयों व कॉलेजों द्वारा एक वर्ष की अवधि का बी.एड. कार्यक्रम चलाया जा रहा है। अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ यह एक वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम भी राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (National Council of Teacher Education) के निर्देशन में संचालित किया जाता है। परिषद ने कुछ मानकों का निर्धारण किया है, जिसके दायरे में विद्यार्थी को प्रशिक्षण लेना पड़ता है। विद्यार्थी इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के उपरांत अध्यापक बनकर समाज एवं राष्ट्र की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में प्रशिक्षण प्राप्त करके विद्यार्थी अध्यापन पेशे में आते हैं। इन प्रशिक्षुओं की प्रशिक्षण के प्रति क्या अभिवृत्ति है? वर्तमान अध्ययन में इसी बिंदु को सम्मिलित किया गया है तथा यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी इस पेशे को प्राथमिकता के रूप में चयनित करते हैं या विकल्प के रूप में।

उद्देश्य

1. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

7. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
8. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
9. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
10. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
11. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
12. विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

विधि (Method)–प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप सर्वेक्षण (Survey Method) पर आधारित है।

प्रतिदर्श (Sample)– प्रतिदर्श के रूप में बी. एड. एक वर्षीय में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 140 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के उपकरण (Tool of study)– प्रस्तुत अध्ययन हेतु स्वनिर्मित छात्राध्यापक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता– उपर्युक्त उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण–पुनर्परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गयी है। छात्राध्यापक अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता का मान 0.71 ज्ञात हुआ। उपकरण की रूप वैधता (Face Validity) संबंधित विषय विशेषज्ञों के परामर्श एवं समालोचना द्वारा निर्धारित की गयी।

आँकड़ों का संकलन– आँकड़ों के संकलन हेतु सन् 2012–13 में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बी. एड. के 140 विद्यार्थियों (70 विद्यार्थी विश्वविद्यालय एवं 70 विद्यार्थी राजकीय महाविद्यालय) को सम्मिलित किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण– आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है, जिसमें माध्य (Mean) तथा मानक विचलन (Standerd Deviation) ज्ञात किया गया है। इसके अतिरिक्त दो चरों के मध्य अंतर का विश्लेषण करने हेतु टी–परीक्षण (T-test) का उपयोग किया गया है। चरों के मध्य अंतर की सार्थकता को 0.01 विश्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया है।

उद्देश्य 1– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 1

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी–परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय	70	85.37	30.32	3.67*
महाविद्यालय	70	71.47	8.92	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 1 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण से पूर्व शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (85.37) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (71.47) का मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक अभ्यास शिक्षण से पूर्व महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अधिक जागरूक थे।

उद्देश्य 2– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 2

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी–परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय	70	96.00	6.53	16.29*
महाविद्यालय	70	75.29	8.38	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 2 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (96.00) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (75.29) का मध्यमान कम है।

अतः कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों ने अभ्यास शिक्षण के पश्चात् महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अधिक रुचि ली।

उद्देश्य 3– विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 3

विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी–परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	85.37	30.32	3.05*
अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	96.00	6.53	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 3 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों का अभ्यास शिक्षण से पूर्व (85.37) की अपेक्षा अभ्यास शिक्षण के पश्चात् (96.00) का मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कार्य के प्रति उनके दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया।

उद्देश्य 4– महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 4

महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	71.47	8.92	2.60*
अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	75.29	8.38	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 4 से स्पष्ट है कि महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर महाविद्यालय के छात्राध्यापकों का अभ्यास शिक्षण से पूर्व (71.47) की अपेक्षा अभ्यास शिक्षण के पश्चात् (75.29) का मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कार्य के प्रति उनके दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया।

उद्देश्य 5– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 5

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	27.50	2.64	13.30*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	20.45	3.54	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 5 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण व्यवसाय के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (27.50) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (20.45) का मध्यमान कम है। अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक शिक्षण व्यवसाय के प्रति पहले से ही जागरूक थे ।

उद्देश्य 6– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 6

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण व्यवसाय के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	24.72	9.04	3.67*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	20.48	3.37	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 6 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण व्यवसाय के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (24.72) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (20.48) का मध्यमान कम है।

अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों ने अभ्यास शिक्षण के पश्चात् महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से शिक्षण व्यवसाय को अधिक महत्त्व दिया।

उद्देश्य 7– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्वशिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 7

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	25.60	2.95	6.98*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	22.45	2.33	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 7 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण से पूर्व शिक्षण कौशल के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (25.60) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (22.45) का मध्यमान कम है। अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक शिक्षण कौशल के प्रति महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से पहले से ही जागरूक थे।

उद्देश्य 8– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 8

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कौशल के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	23.87	7.48	2.06*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	21.85	3.27	

*0.05 स्तर पर सार्थक

सारणी 8 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कौशल के मध्य 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (23. 87) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (21.85) का मध्यमान कम है। अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक अभ्यास शिक्षण के पश्चात् शिक्षण कौशल के महत्त्व को महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अधिक समझा।

उद्देश्य 9– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 9

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	23.12	3.97	5.51*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	19.54	3.70	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 9 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण से पूर्व अनुशासन के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (23.12) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (19.54) का मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक अनुशासन के प्रति पहले से ही जागरूक थे।

उद्देश्य 10– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 10

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् अनुशासन के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	21.14	7.96	3.75*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	17.31	3.02	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 10 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् अनुशासन के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (21.14) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (17.31) का मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक अभ्यास शिक्षण के समय महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अधिक अनुशासित रहे जिसका प्रभाव अभ्यास शिक्षण के पश्चात् दिखायी दिया।

उद्देश्य 11– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 11

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण से पूर्व पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	19.77	3.62	12.64*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण से पूर्व	70	12.82	2.81	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी 11 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण से पूर्व पाठ्य सहगामी क्रियाओं के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (19.77) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (12.82) का मध्यमान कम है। अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति पहले से ही जागरूक थे।

उद्देश्य 12– विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सारणी 12

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय छात्राध्यापकों के अभ्यास शिक्षण के पश्चात् पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य टी-परीक्षण का सारांश

छात्राध्यापक	*N*	*Mean*	*Sd.*	*T-Value*
विश्वविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	15.62	8.05	3.89*
महाविद्यालय अभ्यास शिक्षण के पश्चात्	70	11.67	2.70	

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 12 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में अभ्यास शिक्षण के पश्चात् पाठ्य सहगामी क्रियाओं के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। मध्यमानों के आधार पर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों (15. 62) की अपेक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों (11.67) का मध्यमान कम है। अत: कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने का अधिक अवसर प्राप्त हुआ जिसका प्रभाव अभ्यास शिक्षण के पश्चात् दिखायी दिया जो महाविद्यालय के छात्राध्यापकों के अंतर का कारण है।

परिणाम– अध्ययन के परिणाम में पाया गया कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का मध्यमान महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अधिक है। विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों ने अभ्यास शिक्षण से पूर्व एवं अभ्यास शिक्षण के पश्चात् भी सभी विमाओं (शिक्षण व्यवसाय, शिक्षण कौशल, अनुशासन तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं) पर महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अच्छा प्रदर्शन किया। सभी विमाओं पर दोनों समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर भी पाया गया।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति महाविद्यालय के छात्राध्यापकों से अच्छी है। जबकि दोनों अध्यापक बनने हेतु ही प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं और कल यही देश के भविष्य निर्माण में योगदान देंगे। महाविद्यालय के

छात्राध्यापकों द्वारा शैक्षिक अभिवृत्ति के प्रति लचर प्रदर्शन सोचनीय है।

इस विशाल देश में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने हेतु बहुतायत मात्रा में शिक्षकों की आवश्यकता होती है और ऐसे संस्थान कम हैं जो सुविधा संपन्न हों। जिन छात्राध्यापकों ने अच्छा प्रदर्शन किया है वे विश्वविद्यालय स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले हैं, जहाँ उचित शैक्षिक वातावरण एवं सभी विषयों के अध्यापक एवं विषय विशेषज्ञ उपलब्ध थे। छात्राध्यापकों को बैठने की समुचित व्यवस्था, अच्छी लाइब्रेरी, समय-समय पर विशिष्ट व्यक्तियों के व्याख्यान का आयोजन होता रहता है। शिक्षणेत्तर क्रियाकलाप (शैक्षिक भ्रमण, स्काउट-गाइड प्रशिक्षण, एस. यू. पी. डब्ल्यू. एवं शैक्षिक गोष्ठी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन) संपन्न होते रहते हैं। वहीं महाविद्यालय स्तर पर इन सभी का आंशिक अथवा पूर्णतया अभाव पाया जाता है।

महाविद्यालय स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षकों से भी संबंधित समस्या है। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में प्रशिक्षकों के वेतन, अवकाश तथा अन्य सुविधाओं को लेकर टकराव होते रहते हैं। नौकरी की अनिश्चितता भी प्रशिक्षकों को पूर्ण मनोयोग से कार्य करने में बाधा उत्पन्न करती है।

शैक्षिक निहितार्थ– प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि यदि महाविद्यालय स्तर पर भी विश्वविद्यालय जैसी सुविधाएँ एवं अवसर उपलब्ध कराए जाएँ तो महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की भी शैक्षिक अभिवृत्ति में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है तथा अनुशासन को बढ़ाया जा सकता है।

परिसीमन– प्रस्तुत अध्ययन में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के छात्राध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में हेमवतीनंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड (बी. एड. विभाग) के छात्राध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

संदर्भ

करलिंगर, एफ.एन. 2000. *फ़ाउंडेशन ऑफ़ बिहेवियरल रिसर्च.* सुरजीत पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

गुप्ता, एस. पी. 2007. *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

______ 2008. *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

गुप्ता, एस. पी. और गुप्ता, ए. 2007. *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

मंगल, एस. के. 2010. *शिक्षा मनोविज्ञान.* फ़ाई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

सिंह, ए. के. 2005. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ.* भारती भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना.

______ 2008. *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.